वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2021

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 170वां शुभ जन्म महोत्सव

देव समाज के सम्बन्ध में।

देव समाज के अंग होकर आप उसके लिए क्या करते हैं?

सुख अनुराग की लीला

आत्मा की खुराक

भाई बहन का सम्बन्ध

जीवन प्रसंग

देश विदेश के समाचार

जीवन के बनने के नियम

प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है (लेकिन जीने की अकांक्षा रखकर कोई नहीं जी सकता) जीने के अपने नियम हैं। नियम को अटल इसलिए कहते हैं कि वह कभी नहीं टलते। चाहे कोई जन जाने या न जाने, नियम का नतीजा ज़रूर पूरा होगा। अगर तुम जानना चाहो कि नेचर में तुम्हारा अस्तित्त्व के कायम होने के नियम क्या हैं? तो जैसे जैसे शरीर के सम्बन्ध में भी नियम हैं, वैसे ही आत्मा के सम्बन्ध में भी नियम हैं। प्रत्येक मनुष्य को अपनी गतियों को पहचाने की ज़रूरत है। कौन सी गतियां नीच हैं और कौन सी गतियां उच्च हैं? फिर केवल जान लेना ही यथेष्ट नहीं। जो भाव नीच गति करवा रहा है, उसमें परिवर्तन आने की आवश्यकता है। उच्च परिवर्तन उच्च भावों से आता है। यह प्रभाव प्रत्येक अधिकारी आत्मा को देवात्मा से मिल सकते हैं। कोई भी जन तजरबा करके देख सकता है। समाज में रहकर भी एक एक जन का पतन हो सकता है और होता है। क्यों? इसलिए कि देवात्मा के देव प्रभावों का मिलना बन्द हो जाता है।

परिवर्तन दो प्रकार का है। एक निराकांक्षित परिवर्तन और दूसरा आकांक्षित परिवर्तन। तुम में से बहुतों में जो परिवर्तन आया है यह निराकांक्षित है अर्थात (तुमने खुद नहीं चाहा कि तुम में उच्च परिवर्तन आवे) कितने ही जन हैं, जिनमें और अधिक परिवर्तन आना चाहिए। हम यत्न करते है कि उनमें बेहतरी आवे। आकांक्षित परिवर्तन के बिना सब विनिष्ट होने के लिए हैं। ऐसी अवस्था रखकर बेशक कोई खुश रह सकता है, परन्तु उसका नष्ट होना आवश्यक है।

यह जानने की आवश्यकता है कि जीवन दाता से कटकर एक एक जन का आत्मा नीच बनता है, अन्धकार ग्रस्त हो जाता है और कठोर बन जाता है इसलिए जब तक तुम्हारे साधन देव प्रभाव दायक न हों, तब तक तुम्हारा भला नही हो सकता। हम पूछते हैं कि तुम्हारा धर्म जगत में जन्म हुआ है या नहीं? धर्म जगत में जन्म होने पर यह आकांक्षा पैदा होती है कि मेरा नीच गतियों से उद्धार हो। मेरे भीतर उच्च गतियों का विकास हो। इसमें जो कुछ जाता हो जावे, रहता हो रहे। याद रखो, नेचर के किसी अस्तित्त्व को सताकर या मारकर तुम उसके नुकसान से नहीं बच सकते तबाही से नहीं बच सकते। बेशक तुम अन्दर विकार या मैल को छुपा कर रख सकते हो, उससे तुम मरोगे ज़रूर।

- देवात्मा की वाणी

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 2
फरवरी – 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 170वां शुभ जन्म महोत्सव

COVID-19 के कारण इस वर्ष भगवान देवात्मा का पावन जन्म महोत्सव पहले की तरह नहीं, बल्कि नए तरीके से मनाया गया। इसके लिए हमारे बहुत माननीय धर्म संबंधी श्रीमान सुखदेव सिंह जी ने **England** में बहुत महान प्रबन्ध कर दिया। और यहां चण्डीगढ़ में श्रीमान बलदेव सिंह जी और जगदीश जी ने और देवाश्रम में निवास करने वाले माननीय परिवार श्रीमान रमेश जी और उनके परिवार ने बहुत सहायता की। इस बार **COVID-19** की वजह ने इकट्ठे होकर महोत्सव नहीं मनाया जा सकता था। इसलिए बहुत सारे धर्म संबंधियों को **online** महोत्सव की सभाएं सुनाने और देखने का प्रबंध किया गया।

प्रवेश सभा : 29.12.2020, 4 बजे शाम :- इस सभा के सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे और इनकी सहायता के लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी इनके साथ विराजमान थे। देव स्त्रोत के गान और व्याख्या के बाद ही सभापति जी ने फरमाया कि इस सभा और महोत्सव के लाभ उठाने के लिए परिवर्तन के अटल नियम और विकास के महान नियम को जानना ज़रूरी है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव विकास के नियम की सबसे महान और उच्चतम देन मानवता को है। इस विश्व में भगवान देवात्मा ने जो मानव हृदयों को बदलने का अर्थात् नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का महा अद्भूत कार्य किया है इसमें से श्री सभापति जी ने दो विशेष परिवारों के और उनके विशेष महान जनों के उपकारों का बहुत गहरे भावों से ब्यान करना शुरू किया। इनमें से पहले पूहला के श्रीमान सरदार हरनाम सिंह जी और उनके सुपुत्र श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और अन्य परिवारिक जनों की विशेष मेहरबानियों का विशेष शुक्रगुजारी के भाव से विशेष भावों और आंसूओं के साथ ब्यान किया। पूहला गांव में लाने के लिए श्रद्धेय श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहाखाला ने श्रीमान जी की माता जी को प्रेरित किया और उनको पूहला लाकर, उन्हें इस पावन और महा हितकर दर के साथ जोड़ने का महान उपकार किया। उसका ब्यान भी श्रीमान जी ने बहुत जोरदार भावों के साथ बहती आँखों के साथ जिन शब्दों में किया वो औरों को भी हिला रहे थे। श्रीमान जी बहुत-बहुत ज्यादा भावों से प्रेरित होकर बोलते गए जो बहुत भाव पूर्ण था। फिर श्री सभापति जी ने प्रार्थना करके श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कुछ कहने के लिए समय दिया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि जिन भावों से यह सभा शुरू हुई है। इससे बढ़िया इसकी शुरूआत नहीं हो सकती थी। इस दर पर जो उच्च भावों का दान मिलता है वो और कहीं नहीं मिलता। शुक्रगुज़ारी के भाव से जो श्रीमान बलदेव सिंह

जी बोल रहे थे ऐसे भाव दुनिया में नहीं हैं। परम पूजनीय भगवान अधिकारी मनुष्यों के भीतर शुक्रगुज़ारी का भाव उन्नत करके उनके घरो में स्वर्ग ला रहे हैं। ऐसा काम विश्व के और धर्मों में कहीं नहीं हो रहा। यहां पर नाशुक्रे बच्चे शुक्रगुज़ार बनकर माता पिता के लिए सच्चे सुख के हेतु बनते हैं। नाशुक्रे पति पत्नी भी शुक्रगुज़ार बनकर घरों में उच्च मेल पैदा करते हैं। इस महोत्सव पर गुरू भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को अधिकारी हृदयों तक पहुंचाने का गहरा प्रयत्न किया जा रहा है। जितना अधिक हमारे दिल इन देव प्रभावों के अमृत को लाभ कर सकेंगे, उतना ही अधिक इसकी सफलता होगी। और इसके लिए हमें हमारे हृदयों को अधिकारी अवस्था में अर्थात् प्रार्थी अवस्था में लाने की आवश्यकता है। आगे आने वाले दिनों में सेवक सेविका को ऐकाकारी के साथ शामिल होने की प्रार्थना की।

30.12.2020, सवेरे 10.30 बजे, पहली सभा :– इस सभा का विषय था परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक संबंध और इस सभा के परिचालक श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। देव स्त्रोत के गान और व्याख्या के बाद एक भजन का गान हुआ :- परम आवश्यक जीवनदायक मेरे भगवन का संबंध। इस भजन के बाद सभापति जी ने सभा की सफलता के लिए गहरे भावों से प्रार्थना की। फिर सभापति जी ने ब्यान करते हुए कहा कि इस विश्व में बहुत सारे अस्तित्व हैं जिनके साथ परम आवश्यक जीवनदायक संबंध है। इसमें हवा या आक्सीजन ऐसा ही अजीवित पदार्थ है जो हमारे जीवन के लिए परम आवश्यक जीवनदायक संबंधी है। ऐसे ही पानी भी परम आवश्यक जीवनदायक संबंधी है। हर जीवधारी के लिए भोजन भी उसका परम आवश्यक और जीवनदायक संबंधी है। यह भौतिक सूर्य भी सब जीवधारियों के जीवन का आधार है। इसकी रोशनी और ताप सब जीवधारियों के लिए परम आवश्यक और जीवनदायक संबंध है। सभापति जी ने बताया कि सब जीवधारियों के अस्तित्व में उनकी जीवनी शक्ति ही मुख्य वा सार होती है। गेहूँ का दाना तभी पौधा बनकर दाने बना सकता है अगर उसकी जीवनी शक्ति ठीक हो और उसे ठीक हालात मिले। इसी तरह पशु जगत में भी इस सच्चाई को देखा जा सकता है। पक्षियों के अंडों में जो जीवनी शक्ति होती है, उससे ही बच्चे पैदा होते हैं। यह सच्चाई मनुष्य को जानना बहुत जरूरी है कि उसके अस्तित्व में आत्मा ही मुख्य वा सार वस्तु है। और उसकी आत्मा में भी उसकी निर्माणकारी शक्ति मुख्य है। मनुष्य देवात्मा के संबंध के बिना अपनी निर्माणकारी शक्ति की रक्षा नहीं कर सकता। देवात्मा का संबंध ही मनुष्य के आत्मा और निर्माणकारी शक्ति का विकास उच्च भाव पैदा करके करते हैं। सभापति जी ने अपना परिवर्तन भी बहुत गहरे भावों से भरकर ब्यान किया। सभापति जी ने भगवान देवात्मा के संबंध को मनुष्य की आत्मा के लिए परम आवश्यक जीवनदायक संबंध बहुत ही गहरे भावों से बताया।

पब्लिक लैक्चर, 4.00 बजें शाम :– भजन: "हे सत्य धर्म अवतारी, मैं आया शरण तुम्हारी" इस पब्लिक लैक्चर के वक्ता थे श्रीमती डा. शशी जैन जी। उनका विषय था :- आधुनिक युग के संदर्भ में देवधर्म का महत्व। इस लैक्चर के सभापति जी श्रीमती डा. सतिद्रर ढिल्लों जी थे। उन्होंने माननीय वक्ता का बहुत सुन्दर परिचय कराया। उनकी जन्मजात योग्यताओं का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि डा. शशि जैन जी ने बहुत बार **Blood** दान किया है और अब इन्होंने अपनी पूरी **Body** दान की हुई है। फिर माननीय वक्ता ने अपना पब्लिक लैक्चर शुरु किया और फरमाया कि आधुनिक युग विज्ञान का युग है। इस युग के दो पहलू हैं एक साकारात्मक और एक नकारात्मक फल है। जहां आधुनिक युग में **Industrial Revolution, Green revolution, Digital revolution** ने बहुत

विकास किया है। **Medical Science** में भी बहुत उन्नति हुई है। और **organ transplant** होने लग पड़ा है और बहुत विकास हुआ है। वहीं मनुष्य ने इस आधुनिक युग में अपने नीच भावों से बहुत खराब लीला भी पैदा की है। फिर माननीय वक्ता ने आधुनिक युग के संदर्भ में देव धर्म की शिक्षा का बहुत खूबसूरत वर्णन किया। उन्होंने देव धर्म में मोक्ष, नीच और उच्च गतियां, शुभ और अशुभ और भगवान देवात्मा की संबंध तत्व की शिक्षा पर बहुत अच्छे ढंग से रोशनी डाली। वक्ता का ब्यान बहुत ही ज्ञान से भरपूर था। उसके बाद सभापति जी ने लैक्चर की भरपूर प्रशंसा की, कि यह लैक्चर जहां ज्ञान वर्धक था, वहां गुरू महाराज की महिमा को दर्शाने वाला था।

31.12.2020, बुधवार, समय 1030 बजे, महासभा :- इस सभा का संचालन लुधियाना निवासी हमारे माननीय धर्म सम्बन्धी श्रीमान यश पाल जी भल्ला ने किया।

विषय :- "भगवान देवात्मा का अद्वितीय परम लक्ष्य और उसकी सिद्धि के लिए उनका अद्वितीय तप"

उनके घर के मन्दिर को बहुत सुन्दर फूलों की लड़ीयों से बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया। **ONLINE** देखकर भी उस सुन्दर वातावरण की महक महसूस होती थी।

तीन भजनों के मधुर-गान के बाद सामूहिक देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई।

सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान के द्वार में हृदय-गत भावों से प्रार्थना और कामना की। फिर उस विशेष भजन का गान किया, जो स्वयं पूजनीय भगवान का रचा हुआ है।

"अद्वितीय जीवन ब्रत धारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" सभापति जी ने पूजनीय भगवान को नमन करते हुए, कहा कि परम पूजनीय भगवान शत: शत: ही नहीं हज़ार हज़ार बार धन्य धन्य कहने को मन करता है। उन्होंने कहा कि इस सभा में हमारा कल्याण हमारी योग्यता और नेचर के नियमों को पूरा करने से ही हो सकता है।

नेचर के विकास के कारज का सुन्दर, संक्षेप वर्णन करने के बाद, बताया कि इसी महान नियम के पूरा होने पर देवात्मा का आर्विभाव हुआ। श्री अकबरपुर में एक विशेष वंश के एक विशेष परिवार में हुआ। आने वाले समय में इस स्थान की महिमा प्रकाशित होती जाएगी। लोगों को आसानी से इस स्थान के दर्शन करने की बारी नहीं आएगी। श्रीमान पी. वी. करल जी, श्रीमान हितैषी सिंह जी, श्रीमान बुद्ध सिंह जी इस शुभ अवसर पर विशेष भाव प्रकाश करते थे। श्रीमान बुद्ध सिंह जी, जो इस दर पर आने से पहले जो बिल्कुल अनपढ़ थे, वह अनारकली में प्रोफैसरों को लैक्चर दिया करते थे।

श्री सभापति जी ने 1924, 1926 और 1927-1920 तक कई शुभ अवसरों पर विशेष देव वानी और उच्च धर्म सम्बन्धियों के ब्यानों की महिमा का ब्यान किया। उन्होंने बताया कि जब तक असम्भव न हो जाए, भगवान देवात्मा हित साधन करने के लिए बेबस हो जाते थे। जिससे उनकी अनमोल सेहत को बहुत हानि पहुँचती थी। कई बार मृत्यु के करीब पहुँच जाते थे। उनके दुख से भरकर विलापों का भी सभापति जी ने बहुत प्रभावशाली ढंग से ब्यान किया।

लहौर में जो पत्रिकाएं जारी की, उनकों पढ़कर श्रीमान भाई अमर सिंह जी ने कहा कि मैं अपने आपको और हालाक नहीं कर सकता। परम पूजनीय भगवान ने अपना जीवन व्रत ग्रहण किया, सरकारी नौकरी यह कहकर छोड़ दी कि मैं किसी और काम के लिए हूं, नौकरी के लिए नहीं। 32 वर्ष की भरी जवानी में सन् 1882 में जीवन व्रत ग्रहण किया

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।"

फिर सारी उमर हर हालत में जीवन व्रत के लिए सच्चे रहे। एक-2 समय अथाह दुखों और तड़पन में से

गुजरना पड़ा। विरोधियों ने बहुत तसीहे दिए, परन्तु अपने जीवन व्रत से एक पग भी डांवांडोल नहीं हुए।

इन सबका फल यह हुआ कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देवरूप में देव ज्योति और देव तेज का विकास हुआ। जिसमें आत्म अन्धकार दूर करने और मानवता का उच्च रूप में विकास करने की क्षमता थी। इस अद्भुत देव ज्योति से सच्चे धर्म की फिलासफी और आत्मिक सच्चाई प्रगट हुई। पूजनीय देवशास्त्र चारों भाग इस फिलासफी का निचोड़ है। इनका अध्ययन करके श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी फरमाते हैं कि सारे युग का अन्धकार दूर हो गया है। भाई अमर - सिंह जी लिखते हैं कि यह ज्ञान ही नहीं क्रान्ति है। यह शिक्षा विज्ञानमूलक ही नहीं विश्वव्यापी होगी क्योंकि यह नेचर के अटल नियमों पर आधारित है। इसी शिक्षा से यह ज्ञान मिलता है कि नीच गतियों से आत्मा अर्थात हमारी जीवनी शक्ति का पतन आवश्यक है और उच्च गतियों से ही हमारी निर्माणकारी शक्तियों का बल बढ़ता है।

श्रद्धेय कनल जी यह अद्वितीय विज्ञान मूलक शिक्षा प्राप्त करके फरमाते हैं कि महाराज ने हम भिख़ारियों को राज गद्दी पर बिठा दिया है।

देव प्रभावों को प्राप्त करके पता लगता है कि साधारण नेकी करना कोई वचित्र बात नहीं, यदि नेकी किसी बुराई करने वाले के साथ की तो विचित्र बात है। यदि नेकी किसी कृत्घन के साथ की जाए, तो लाखों गुणा विचित्र बात है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने कृत्घनों का भला करते हैं। वह चाहते थे कि मेरे सेवक भी ऐसे बनें, और उन्होंने कई ऐसे जन पैदा किए।

अन्त में श्री सभापति जी ने गुरु महाराज की विशेष अपील में से पढ़कर सुनाया :-

"क्या तुम केवल तामाशाई बनोगे, तो इस प्रकार अत्यन्त पतित दशा प्राप्त करके, पूर्ण मुर्दा बनकर गल सड़कर मर जाना चाहते हो। मनुष्य को आत्मघात करने का बेशक अधिकार है, पर ऐसी अवस्था रखकर तुम मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं रहते।" भगवान फरमाते हैं :-

"हुंकार भरकर उठो, और मेरे मिशन में लग जाओ, ताकि मौत आने पर तुम्हें पछताना ना पड़े।"

सभापति जी ने श्रीमान साधू जानकी दास जी, श्री पी. वी. कनल जी, श्रीमान भाई अमर सिंह जी, श्रीमान भाई मोहन देव जी, श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी, आदि जीवनों की साक्षी देते हुए, इस प्रभावशाली सभा की समाप्ति की।

31.12.2020 शाम 4.00 बजे, पब्लिक लैक्चर :-

वक्ता : डॉ. विनोद खेड़ा जी,

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

भजन : तुम संग अपनी लगन लगाऊं. . . . .।

इसके पश्चात सभापति जी ने डा. खेड़ा का उनकी इच्छा अनुसार बहुत संक्षिप्त परिचय करवाते हुए बताया कि डा. खेड़ा साहिब के अंदर देव समाज बचपन से है। इन्हें माता - पिता दोनों तरफ से बहुत अच्छे **Genes** मिले हैं और बचपन से देव समाज का वातावरण मिला है। इनके माता पिता ने इनको बहुत अच्छी शिक्षा दी है। अर्थात् **Chemical Engineering** में **P.hd** और इससे आगे **Post doctorate** भी विदेश में की है। यह हर वर्ष श्रद्धा से गुरू महाराज के जन्म महोत्सव पर **Public** लैक्चर देते हैं। इस बार इन्होंने अपना लैक्चर श्रद्धावानम् लभ्ते ज्ञानम्' विषय पर देना है यह कहते हुए मानयोग सभापति जी ने उन्हें लैक्चर देने के लिए प्रार्थना की फिर माननीय वक्ता ने अपना लैक्चर देना शुरु किया। उन्होंने बताया कि मुझे अपनी जिन्दगी में जो काम आज कर रहा हूं वो 50 साल पहले करने चाहिए थे। फिर उन्होंने बताया कि विश्व में हर चीज दो चीजों से बनी है एक पदार्थ और दूसरी शक्ति। पदार्थ को तो हम देख सकते हैं। परन्तु शक्ति

सूक्ष्म होती है। जीवनी शक्ति के संबध में तो बहुत अन्धेरा है। श्रद्धा भी एक शक्ति है। उन्होंने एक उर्दू का शेयर बोला

"मिटादे अपनी हस्ती को गर कोई मरत्बा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुल्जार होता है।"

अपनी मैं को कम किए बिना हम सुन्दर जीवन नहीं पा सकते। अहं सबसे बड़ा **Virus** है, जो भगवान के साथ जोड़ने में रुकावट है। और इस **Virus** का **Antivirus** श्रद्धा का भाव है। फिर उन्होंने श्रद्धा भाव के 3 **field** बताए। (1) मानसिक जीवन के संबंध में, (2) शारीरिक जीवन के संबंध में (3) आत्मिक जीवन के संबंध में। फिर उन्होंने बताया कि इन सारे पक्षों में श्रद्धावान ही विकास करते हैं। श्रद्धा भाव से गुणधारी के गुण श्रद्धावान की तरफ **Flow** कर जाते है। श्रद्धा के महत्व को बताते हुए उन्होंने एकलव्य का दृष्टान्त दिया। कई व्यक्तियों की और बात करते हुए उन्होंने दो महान हस्तियों का विशेष वर्णन किया। जिनमें पहले श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जी हैं। जब यह श्रद्धा भाव से गुरू महाराज से जुड़े तो इनके जीवन की कायाकल्प हो गई। इनके पाप, मिथ्या विश्वास, मान, बडाई से जो हानि हो रही थी उससे वह बच गए। भगवान से श्रद्धा भाव से जुड़कर इनका जीवन उच्च से उच्च बनता गया। इनके अन्दर श्रद्धा, शुक्रगुजारी का विकास हुआ। इनके सुपुत्र श्री सरमुख सिंह जी ने 1907 में फरमाया था कि अगर हम सारा परिवार गुरु महाराज के मिशन में कुर्बान हो जाएं तो भी हम उनका कर्जा उतार नहीं सकते। फिर माननीय वक्ता ने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के श्रद्धा भाव का ज़िकर किया। सोलन में उनकी मशक और रेड़े से पानी लाकर अपनी श्रद्धा को बढ़ाने की घटनाओं का ज़िकर किया। श्रीमान जी जो राजाओं महाराजों के रिश्तेदार थे। श्रद्धा के इसी भाव से ही बहुत बड़े परोपकारी बनें और बच्चो की विशेष सेवा करके उनसे ऐसे काम ले लेते थे जो कर्मचारी भी कभी नहीं कर सकते। क्योंकि उनके बच्चे हर रोज़ साधन करते और साधन कापी लिखते और माता पिता के उपकारों का गान करते थे। और गुरू महाराज ने उनके स्कूल को जीवनालय का खिताब दिया। और श्रद्धा भाव से जो वह गुरू महाराज के प्रभाव पाते थे। काश! हम भी वह प्रभाव पा सकें। जो देव प्रभाव पाठ में है वह उनका काम करेंगे। ज्ञानी लोग भी इसको झूठला नहीं सकते। फिर सभापति जी ने माननीय वक्ता का धन्यवाद किया और अन्त में उन्होंने धन और जन की अपील की। जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई।

दानियों की मोटी – 2 लिस्ट इस प्रकार है

श्रीमान बलदेव सिंह जी **& Family**	1,45,000	श्रीमान विवेक जी डोगरा	1000
श्रीमान मुन्शा सिंह जी	50,000	डा० सतिन्द्र ढ़िल्लो	1000
डाक्टर विनोद जी खेड़ा	50,000	श्रीमान बल बहादुर जी	1000
श्रीमान सुभाष जी **& Family**	30,000	**D.S. Chauhan, Panchkula**	1000
विनीत जी खेड़ा	20,000	श्रीमान हिम्मत सिंह जी, पदमपुर	500
श्रीमान डाक्टर जयरथ जी	9700	श्रीमान जगदीष राय सिंगला	500
दान **Collection from Malika**	6500	श्रीमान ज्ञान चन्द जी ग्रोवर	500
श्रीमान खेमचन्द जी	5000	श्रीमान सुरेन्द्र भाटिया, गंगानगर	500
श्रीमान डी. पी. सिंह	5000	श्रीमान ज्ञान जी, गोनियाना	500
श्रीमान सुखदेव जी गोनियाना	1930	श्रीमान रमेश जी, डेराबस्सी	500
श्रीमान अशोका सिंगला	2000	श्रीमान ओ. पी. वर्मा जी	5000
श्रीमति सरोज जी कुक्कड़	1100	**Dan Collection**	500
श्री राज कुमार जी भटिंडा	1000		

देव समाज के सम्बन्ध में ।

16वें वार्षिक देवोत्सव के शुभ अवसर पर "दल बद्धता" के विषय में उपदेश

(जीवन पथ, चैत्र सं. 1959 वि.)

उक्त अवसर पर जीवन दाता भगवान देवात्मा ने अपनी अपार कृपा से परिचालित होकर आत्माओं के कल्याण के निमित्त 'दल बद्धता' के विषय में एक अत्यन्त कल्याणकारी और ज्योति से परिपूर्ण तेजस्वी उपदेश दिया, जिस में उन्होंने प्रगट किया, कि :-

बहु संख्या में जब किसी जाति के पशु वा मनुष्य मिलकर रहते हैं, अथवा कहीं एकत्र होते हैं, तो उसे समूह, समुदाय, मजमा वा जमायत कहते हैं, जैसे भेड़ों का समूह, बकरियों का समूह, कबूतरों का समूह, किसी मेले वा तमाशे में वर्तमान मनुष्यों का समूह वा मजमा, स्कूल के लड़कों की जमायत, इत्यादि। परन्तु यहां यह जानना आवश्यक है, कि 'दल बद्धता' केवल किसी समूह वा मजमे का नाम नहीं है। सैकड़ों भेड़ और बकरियों के एकत्र हो जाने का नाम रेवड़ा वा समूह अवश्य है, परन्तु उनमें किसी प्रकार की दल बद्धता नहीं पाई जाती। फिर दल बद्धता क्या है? **किसी साधारण लक्ष्य को लेकर आपस में सहाय के भाव से बहुतों का जुड़ जाना, और दल में से प्रत्येक का प्रत्येक के बचाव वा भले में साथ देना।** इस दल बद्धता से क्या होता है? प्रत्येक की शक्ति प्रत्येक के साथ जुड़ जाने से **बहुत बड़ी शक्ति** उत्पन्न हो जाती है। और ऐसी महान शक्ति के उत्पन्न हो जाने से उस दल की रक्षा और उसके मकसद की उन्नति होती है। भेड़ और बकरियों का समूह तो होता है, परन्तु उनमें दल बद्धता नहीं होती, इसलिए उनके सैकड़ों और हज़ारों के समूह को एक लड़का जिधर चाहे, हांककर ले जाता है, और वह उस के आगे दम नहीं मार सकतीं। एक-एकपुराने मकान और क़िले में हज़ारों जंगली कबूतर मिलकर रहते हैं, परन्तु एक बद्धता के न होने से वह कोई शक्ति नहीं रखते। वह हज़ारों की संख्या में होकर भी एक बिल्ली का मुक़ाबला नहीं कर सकते। एक बिल्ली थोड़े थोड़े करके उन्हें रोज़ चट कर सकती है, और वह उससे अपनी रक्षा नहीं कर सकते। परन्तु भेड़, बकरियों और कबूतरों आदि के मुक़ाबिल में एक नन्हीं सी मधुमक्खी को देखो, वह भी एक-एकछते में हज़ारों मिलकर रहती हैं, परन्तु बेवकूफ़ भेड़ बकरियों की तरह केवल एकत्र निवास नहीं करतीं, किन्तु दलबद्ध होकर रहती हैं, अर्थात नन्हीं सी शकल रखकर भी दिल के विचार से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई होती हैं। वह क्या शहद आदि बनाने के लक्ष्य को लेकर और क्या परस्पर में एक दूसरे की रक्षा के लक्ष्य को लेकर आपस में आन्तरिक सहाय सूत्र से बन्धी हुई होती हैं। और इसका प्रमाण यह है, कि यदि उनके छते पर कोई हमला करें, तो फिर वह भेड़ बकरियों की न्याईं एक दूसरे का मुंह नही तकतीं। किन्तु सैकड़ों मक्खियां कुपित होकर एक साथ छेड़ने वाले पर हमला करती हैं। यहां तक कि अपने से सैकड़ों गुणा बड़े डीलडौल के एक-एक आदमी को यह बहुत सी छोटी मक्खियां अपने अपने डंक मारकर बिलकुल जान से मार देती हैं। तब याद रखो! कि किसी समूह की असल शक्ति बहुत तादाद वा संख्या से नहीं, किन्तु दल बद्धता से होती है। दल बद्धता करे बिना चाहे उसकी कितनी ही संख्या क्यों न हो, सब अकारथ है।

इस दल बद्धता के न होने से हम हिन्दुओं की इतनी दुर्दशा है-ऐसी दुर्दशा कि जिसकी कोई सीमा नहीं। प्रकृति के नियम अटल हैं। जो उन नियमों की परवाह नहीं करते, वह नष्ट हो जाते हैं, और जो करते हैं, वह लाभ उठाते हैं। प्रकृति का नियम पुकार पुकार कर और दृष्टान्त दे देकर कहता है, कि "हे

मनुष्यो! तुम दल बद्ध हो, तब तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी और ऐसी शक्ति से तुम्हारी औरों से रक्षा और तुम्हारे अपने अच्छे उद्देश्य की उन्नति होगी, अन्यथा तुम्हारी बहुत बड़ी दुर्दशा और तुम्हारा बहुत बड़ा अनिष्ट होगा।" जिन लोगों ने प्रकृति की इस महान शिक्षा को सुनकर दल बद्धता ग्रहण की, वह यूरोपियन और जापानी जनों की न्याईं बड़ी बड़ी **"शक्तिशाली जाति"** बन गए, और जाति बनकर धन, धरती आदि के बड़े अधिपति बन गए। परन्तु हम हिन्दु लोग वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म बनकर भी योग योग पुकार कर और त्रिकालदर्शी कहलाकर भी कोई शक्तिशाली जाति न बन सके। और हम में से एक-एकब्रह्म कहलाने वाले पुरुष की एक-एकविजातीय जन के सम्मुख जो जो बुरी गत होती है, उसका वर्णन नहीं हो सकता।

हमारी अपेक्षा यूरोप के कई देशों के लोग संख्या में अधिक नहीं हैं, किन्तु बहुत ही थोड़े हैं, फिर भी वह हम से असंख्या गुना बढ़कर बलवान और हज़ारों गुना धनवान हैं। इसका कारण यही है कि हम कई करोड़ होकर भी, भेड़ बकरियों की न्याईं समूहअवश्य हैं, परन्तु परस्पर किसी सहाय सूत्र से जुड़े हुए नहीं हैं, और वह थोड़ी संख्या में होकर भी मधु मक्खियों की न्याईं सहाय सूत्र से परस्पर जुड़े हुए हैं। हमारे देश के विविध मतों और मिथ्या छूतछात और कुल के भेद ने हम को फाड़ते फाड़ते इतना नीच बना दिया है, कि मानो हमारे भीतर से दल बद्धता के भाव को ही नष्ट कर दिया है। और हमारे लिए दलबद्ध होना ही अत्यन्त कठिन कर दिया है हाय! हमारी कैसी दुर्दशा! कैसी दुर्गति!! कैसी भयानक अवस्था!!!

हमारे देश में फूट और अनमेल का इतना अधिकार हो चुका है, कि सारे जन तो कहीं रहे, कुछ जन भी किसी उच्च सूत्र में बन्ध कर किसी उच्च लक्ष्य में साथ नहीं दे सकते। हां, किसी उच्च लक्ष्य में साथ देना तो कहीं रहा, उलटा उसमें विघ्न डालने में प्रसन्नता लाभ करते हैं।

इस समय हमारे कथन का उद्देश्य अनमेल के भयानक फलों को दिखाकर उनसे बचने और उच्च लक्ष्य को सम्मुख रखकर और उच्च जीवन की रक्षा और उन्नति के लिए दलबद्ध होकर काम करने की आवश्यकता को प्रगट करता है। जब तक इस फूट अर्थात् अनमेल का नाश न हो, तब तक किसी प्रकृत धर्म समाज का संगठन करना और उसका उत्तम रीति से उन्नत होना असम्भव है। प्रकृति के अटल नियमों के अनुसार इस उच्च गति मूलक दल बद्धता के लाभ करने के बिना, चारों ओर के विनाशकारी सामानों के भीतर, तुम्हारी उच्च गति के महा शुभ कार्य का उन्नत होना अत्यन्त कठिन, हां प्राय: असम्भव हैं। इसलिए तुम सब सामाजिक जनों के लिए दल बद्धता के महा हितकर ज्ञान का लाभ करना और जीवन की उच्च गति के लक्ष्य को सम्मुख रखकर **परस्पर सहाय सूत्र** से जुड़ जाना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे एक शरीर में उसके विविध अंग जुड़े हुए होते हैं, कि जो सारे शरीर की रक्षा और भलाई में काम करते हैं, वैसे ही तुम अपनी समाज के सारे शरीर के अंग बनकर एक दूसरे से जुड़ जाओ, समाज के हित के लिए हर काम में उसका साथ दो; हर काम के करने के लिए तैयार हो; अपना तन, मन, धन समाज के लिए अर्पण करो; सामाजिक आज्ञा को सदा पालन करो; तभी समाज में दल बद्धता आ सकती है। तभी उसकी शक्ति बढ़ सकती है। तभी उस के द्वारा न केवल इस देश का किन्तु सारी पृथ्वी का हित हो सकता है, और तभी उसके स्थापन करने का उद्देश्य भी सिद्ध हो सकता है।

ऐसा हो, कि तुम्हारे भीतर यह उच्च लक्ष्य गत दल बद्धता का भाव उत्पन्न और वर्द्धित हो, और तुम उच्च जीवन की प्राप्ति और मनुष्य मात्र के सच्चे कल्याण के कार्य में भाग लेने के योग्य बन सको, और आगामी वर्ष में इस वर्ष की अपेक्षा और भी अधिक उन्नति लाभ कर सको।

देव समाज के अंग होकर आप उसके लिए क्या करते हैं?

जो आत्मा भगवान देवात्मा की सेवकी में ग्रहण अथवा दीक्षित होकर देव समाज में प्रविष्ट हो चुके हैं, उनके लिए आवश्यक है, कि वह अपने आपको देव समाज का एक अंग अथवा प्रत्यंग अनुभव करें, और उसकी एक वा दूसरे प्रकार की उन्नति के लिए अपनी योग्यता के अनुसार अपनी एक वा दूसरी शक्ति के द्वारा यत्न करना अपना कर्तव्य समझें। जीवन्त शरीर के भीतर जैसे प्रत्येक छोटा और बड़ा अंग जब उसकी रक्षा, पालना और उन्नति में सहायता करता है, तभी वह उस का जीवन्त अंग समझा जाता है, और जब कोई अंग इस प्रकार कार्य करना छोड़ देता है, तभी वह मृत अंग समझा जाता है। ऐसी अवस्था में या तो वह काट दिया जाता है, या यूं ही निकम्मा पड़ा रहकर शरीर के लिए बोझे अथवा कई अवस्थाओं में हानि का कारण रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक सेवक को समझना चाहिए, कि वह जो देव समाज की जीवन्त गठन का अंग बना है, उसे अपने जीवन की गति के द्वारा अपनेआप को उसका जीवन्त अंग प्रमाणित करना है। अर्थात् उसकी एक वा दूसरी प्रकार की उन्नति में भाग लेकर जहां उसके साथ अपने सम्बन्ध को सफल करना है, वहां इस सेवा से अपने जीवन को उच्च गति में उन्नत करना है। जिन जिन शुभ कार्यों के द्वारा कोई सेवक देव समाज के लिए जीवन्त और हितकर अंग प्रमाणित हो सकता है, उन में से कुछ यह है :-

(1) वह अपने पारिवारिक और अन्य जनों में देव समाज और उसके संस्थापक का वर्णन करे उनके प्रति श्रद्धा के भाव को उत्पन्न कर सकता है।

(2) देव समाज अपनी पहली श्रेणी के सेवकों से जिन पापों को छुड़ाती है, उन में से किसी एक वा दूसरे पाप से अपने किसी देशवासी को किसी उचित उपाय के द्वारा बचाने का यत्न कर सकता है।

(3) आप किसी उच्च श्रेणी का सेवक होकर अपने से अपेक्षाकृत नीचे के सेवकों की उच्च गति में साधनों आदि के द्वार सहायता कर सकता है।

(4) अपने साथी सेवकों और समाज के कर्मचारियों के जीवन की उन्नति और अधिक से अधिक सफलता अथवा सारी समाज की उन्नति के लिए प्रति दिन मंगल कामना कर सकता है।

(5) देव समाज के नाना हितकर कामों की धन के द्वारा सहायता कर सकता है।

(6) समाज की ओर से जिन विविध स्थानों में सेवकों और श्रद्धालुओं के बच्चों और स्त्रियों के हित के लिए विशेषकर और साधारण जनों के हित के लिए साधारण रूप से जो पाठशालाएं स्थापन की गई हैं, उनमें अपना समय वा धन देकर सहायता कर सकता है।

(7) समाज के सेवकों, उनके परिवारों और साधारण जनों के हित के लिए जो विविध स्थानों में औषधियां बांटी जाती हैं, इस कार्य में समय और धन से सहायता कर सकता है।

(8) समाज की ओर से सेवकों और साधारण जनों के हित के लिए जो पुस्तकें छप चुकी हैं, उनकी इकट्ठी कापियां लेकर अधिकारी जनों में बांट सकता है, अथवा अधिकारी जनों को उनके मोल लेने के लिए प्रस्तुत करके उन्हें बेच सकता है। इत्यादि इत्यादि।

इस प्रकार की बहुत सी बातें हैं, कि जन में एक छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सेवक अपनी योग्यता और अवस्था के अनुसार काम करके अपने आप को समाज का जीवन्त अंग प्रमाणित कर सकता है। और इस सेवा के द्वारा अपने जीवन का भी हित साधन कर सकता है।

सुख अनुराग की लीला

परम पू० भगवान देवात्मा ने यह सत्य मनुष्य मात्र पर ज़ाहिर किया है कि मनुष्य सुख अनुरागी है, और जहां से उसे सुख मिलता है, उसका पक्षपाती बन जाता है या यह कहें कि पक्षपाती बनना उसके लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। वह सुख चाहे दुनियावी सुख हो, चाहे मान प्रशंसा, बड़ाई का सुख हो, चाहे अपने पक्षधारी द्वारा अपने पक्ष को सही बताने का सुख या किसी भी अपने शारीरिक, मान्सिक अर्थात अपने विचार के समर्थन का सुख हो।

मनुष्य प्रकृति बड़ी गुंझलदार है, इसको मनुष्य के लिए समझना महा कठिन ही नहीं, असम्भव है। फिर जब हम किसी मनुष्य के साथ पक्षपात से जुड़ जाते हैं, तो उसको समझना और भी कठिन है।

हमारी यह सुख अनुरागी प्रकृति क्या अपने प्रति और क्या दूसरों के प्रति हमें भ्रम में रखती है। जैसे एक 2 बच्चा अपने माता पिता को सबसे प्रिय समझता है, क्योकि वह हर सुख जिसकी उसको इच्छा होती है, उसे देते है, वह अपने माता पिता को प्यार करता है, दूसरों के पास भी उनकी बढ़चढ़ कर प्रशंसा करता है, परन्तु वही माता पिता जब उसके किसी सुख पूरा करने में असमर्थता दिखाते हैं या वह सुख हानिकारक समझकर उसे देना नहीं चाहते, तो बच्चे की नज़रें बदल जाती हैं, वह अपने उन्हीं माता पिता को घृणा करने लगता है, उन्हें स्वयं बुरा सोचने लगता है, उनकी निन्दा भी करने लगता है, कई बार माता पिता के विरोधियों के साथ मिल जाता है, विरोधी उसका लाभ उठाते हैं। वही बच्चा जो माता पिता को प्यार करता था, उनके बिना पल पर भी नहीं रह सकता था, उस समय उसमें कृतज्ञता का भाव नहीं था, केवल सुख का भाव था (जैसा कि हम सब में है) सुख पूरा न होने पर अपना रूप बदल लेता है।

इसी प्रकार देव समाज की संस्कृति में हमें श्रद्धा, कृतज्ञता की मोटी परिभाषाएं समझ में आ जाती हैं। हम किसी के गुणों या उपकारों का बाख़ान करके इस भ्रम में पड़ जाते हैं। कि हम श्रद्धा वा कृतज्ञता का प्रकाश कर रहे हैं, परन्तु 99% वह हमारे नीच सुखों से प्रेरित और हमारे पक्ष पर अधारित साधन होते हैं। यदि हम श्रद्धा का साधन करते हैं तो हम केवल उनके गुणों का ही बख़ान करेंगे, जिनका हमारे हृदय में पक्ष है, या उस ब्यान से उन जनों को खुश करेंगे, जिनसे अपना स्वार्थ है इसलिए उनके कुर्बानी का बढ़चढ़ कर बाख़ान करेंगे ताकि उनकी नज़र में अपना स्थान बना सकें। परन्तु उससे भी अधिक कुर्बानी वा त्याग करने वालों को किसी ख़ातिर में नहीं लाएंगे। देवात्मा के मिशन में काम करने वालों के प्रति भी हमारा यही रविया है। आज के युग में देव समाज में जो कोई थोड़ा सा भी काम करता है, उसकी प्रशंसा के पुल बांध दिए जाते हैं और उन्हें बड़ी से बड़ी पदवी का अधिकारी घोषित करके समझा जाता है कि हमारे भीतर देव समाज में काम करने वालों की हृदय की गहराई से कदर है, जबकि जिन्होंने इस काम में अपनी जवानी लगा दी, देव समाज के हृदय परिवर्तन के काम में बहुत बढ़ा योगदान दिया, देव समाज की संस्थाओं को बनाने और बढ़ाने में योगदान दिया, देव समाज की करोड़ों की सम्पति बनाई और बढ़ती उमर में भी अपनी योग्यता और परिपक्व अनुभव से इस मिशन में मेहनत कर रहे हैं, उनको किसी ख़ातिर में नहीं लाते, तो गुरू महाराज के प्रति श्रद्धा का सूचक हमारा व्यवहार नहीं,

बल्कि अपने पक्षधरों के प्रति पक्षपात पूर्ण रवैया है, यह सचाई कड़वी है, परन्तु सत्य सदा कड़वा होता है।

यही हाल हमारी कृतज्ञता का है। कई जनों के व्यवहारों से ऐसा लगता है कि वह अपने बड़े से बड़े उपकारी को लताड़ सकते हैं और उन्हें अपमानित करके शायद वह अपनी जीत अनुभव करते हैं, परन्तु किसी सभा में कुछ उपकारियों के उपकारों का ब्यान करके, जिनसे वर्तमान में उनके किसी सुख की पूर्ति होती है, वह भ्रम में पड़ जाते हैं कि उनके साधन कृतज्ञता के साधन है। देवात्मा की शिक्षा के अनुसार सबसे बड़े उपकारी हमारे अध्यात्मिक उपकारी हैं। जो उन्हें भूल जाते हैं, या उनके उपकारों को न केवल अनुभव नहीं करते बल्कि उन्हें अपमानित कर सकते हैं, उसके बाद भी कोई दुख वा पश्चाताप महसूस नहीं करते कि उनके दुर्व्वहार का किसी उपकारी के हृदय पर कितना आघात लगा है, तो वह इस भ्रम में जीते हैं कि वह कृतज्ञता का भाव पैदा कर रहे हैं, यह अध्यात्मिक नियमों के विरुद्ध है।

यह सत्य सब भावों के लिए लागू होता है। हर सुख अनुरागी मनुष्य ऐसा ही कर सकता है। हम मनुष्यों के ही नहीं, हम उस पदार्थ वा जीव के भी पक्षपाती, बन जाते हैं, जिनसे हमें किसी प्रकार का सुख मिलता है। मनुष्य होना और पक्षपाती होना एक ही बात है। हम तो अपनी विचारधारों के ही इतने पक्षपाती हो जाते हैं कि उस विचारधारा पर विचार करने या उस पर निष्पक्ष किसी से कोई राए लेने में असमर्थ्य हो जाते हैं यदि कोई यह कहे कि निष्पक्ष मत रखने वाले कुछ जन बैठकर विचार करें और कोई ठीक निष्कर्ष निकालें तो हम इसके लिए भी तैय्यार नहीं होते। मनुष्य का यह दुर्भाग्य केवल उसे ही नहीं, जिस जिससे वह सम्बन्धित होता है, उसे भी ले डूबता है।

सुख अनुरागों की अजब लीला है, परन्तु उसे हम दूसरों के जीवनों में तो देखते हैं, परन्तु अपनी और ध्यान नहीं जाता। अवश्यकता है कि हम अपनी अपनी अवस्था पर विचार करें और अपनी अपनी योग्यतानुसार उस से उभरें।

(सुरजीत बराड़)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

आत्मा की खुराक

विकास क्रम नेचर का अद्भुत नियम है। इसके द्वारा विश्व के चारों जगतों में निरन्तर उच्च परिवर्तन आता है। विश्व के पदार्थों पेड़ पौधों, पशु-पक्षियों और मानव संसार के भीतर नये गुण वा योग्यताएं पनपती रहती हैं। इससे अध्ययन शील, विचारवान और खोजवान मनुष्यों के ज्ञान में नया इज़ाफा वा प्रगति होती रहती है। यही नया ज्ञान मनुष्य व और जगतों के विकास में सहायक होता है।

देव धर्म के परम पूजनीय बानी और संस्थापक विकास क्रम की अद्भुत देन हैं। उनकी हस्ती का और विशेषकर उनके भावात्मिक विकास का अध्ययन मनुष्य मात्र के लिए सर्वोत्म विषय है, जिसकी ओर मनुष्य की सीमित सोच और समझ को, उसके अंह परिपूर्ण वृति और उसकी बढ़ती हुई योग्यता और सुख स्वादों के टशन उस ओर जाने नहीं देते। परम पू० भगवान देवात्मा ने धर्म या रूहानियत के क्षेत्र में नये ज्ञान का भण्डार खोला है, धर्म जगत का आश्चर्य्य जनक सांईसीकरण किया है और धर्म को, मनुष्यआत्मा को, धर्म के साधनों, पूज्य वा पूजा पाठ को, लोक परलोक को, मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य को बिल्कुल नवीन, आधुनिक और विज्ञान मूलक अर्थ प्रदान किए हैं। इन सब से लाभान्वित होना प्रत्येक मनुष्य का सौभाग्य है।

पहली बात तो यह है कि मनुष्य को आत्मा के अस्तित्व सम्बन्धी कोई ज्ञान नहीं था, वह या तो आत्मा को कल्पित परमात्मा या ब्रह्म का एक अंग समझता आ रहा है, या जो मनुष्य बहुत ज्ञानवान, विचारशील वा विज्ञान मूलक सोच रखते हैं, उन्होंने परमात्मा के अस्तित्व को कल्पित जानकर नकार दिया, उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को भी नकार दिया है। इसलिए अथीसट या रब से मुन्कर, पोज़ीटिविस्ट, Rationlist और तर्कशील वर्गो के लोग आत्मा के अस्तित्व से ही मुन्कर हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि नेचर का हर पदार्थ और आत्मा की हस्ती दो पदार्थों को लेकर बनी है, एक मैटर जो जड़ पदार्थ है, दूसरी का नाम शक्ति है। जैसे जड़ ठोस, हवाई, तरल और सूक्ष्म रूप रखती है, उसी प्रकार शक्ति भी दो प्रकार की है। अजीवित शक्ति जैसे, ताप, बिजली, चुम्बक आदि, जीवित शक्ति, पौधों, पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्ति।

परम पू० भगवान देवात्मा ने मनुष्यात्मा की इस प्रकार परिभाषा की है। उन्होंने फरमाया है "कई प्रकार की शक्तियों (गठन प्राप्त) को लेकर बना, जो जीवित अस्तित्व मनुष्य के शरीर के भीतर वास करता है, वह मनुष्य का आत्मा है" इस प्रकार आत्मा कोई परमात्मा का अंश नहीं है, वह एक जिन्दा शक्ति मय जिन्दा अस्तित्व है।

आत्मा के नये अर्थ यह हैं कि यह निर्लेप नहीं, अमर नहीं, सदा रहने वाला नहीं, यह परिवर्तित होता है, यह कमज़ोर व बलवान होता है, यह जीता भी है और मर भी जाता है। मनुष्य के अस्तित्व में यह मुख्य, असल, सत्य और सार वस्तु है। इसके साथ मनुष्य की हस्ती है। यह है तो मनुष्य जीवित है, नहीं तो मुर्दा है।

कल्पित और अवैज्ञानिक धर्मो के लिए यह

एक अचम्भा ही है कि आत्मा की भी कोई खुराक हो सकती है। हां, जो नियम वा साधन आत्मा को जिन्दा रखते हैं, उसको बलवान बनाते हैं, उसको मृत्यु से बचाते हैं, वही आत्मा की खुराक हो सकते हैं। यह कल्पित धर्मो के लिए नई खोज है।

मनुष्य की जीवनी शक्ति या आत्मा को बलवान करने वाली दो बातें हैं, जो मनुष्य आत्मा की खुराक बनकर उसके लिए बलवर्द्धक और पौष्टिक सिद्ध होती हैं। पहली वस्तु है उच्च असर वा प्रभाव (Higher vibrations या higher influences) जिनका स्वरूप खुशबू जैसा कहा जा सकता है। जो उच्च जीवन धारी मनुष्यों के जीवनों से निकलते हैं, उनको प्रभाव कहते हैं। देवात्मा के देव जीवन के प्रभाव सर्वोच्च प्रभाव हैं, वह मनुष्य के लिए जान और प्राण की वस्तु हैं।

दूसरी चीज़ है दूसरे अस्तित्वों की सेवा या दूसरी हस्तियों के विकास में अमली सहयोग। मनुष्य के ऐसे कर्म जो अपने से निकलकर दूसरे अस्तित्वों का उत्थान करते हैं, उन कर्मो द्वारा मनुष्यात्मा को अति सुन्दर खुराक मिलती है।

इसलिए कहा गया है: -

"By building others, we build ourselves, By destroying others, we destroy ourselves."

अर्थ: - दूसरों को बनाने से हम बनते है, दूसरों की हानि करने से हम नष्ट होते हैं।

उक्त दोनों खुराकें, पदार्थ या कर्म मनुष्यात्मा की बहुमुल्य खुराक हैं।

उच्च असर, उच्च जनों अर्थात उच्च जीवन धारियों से ही प्राप्त हो सकते हैं, देव असर जो सर्वोच्च असर हैं अर्थात रूहानी रोशनी वा तेजमयी प्रभाव, परम पू० भगवान देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने के अटल नियमों के पूरा करने के योग्य होकर ही प्राप्त हो सकते हैं। या किसी मात्रा में उन जनों की संगत से, जिनका किसी अंश देव रूप के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन हुआ है। देवरूप तक या देव प्रभावों तक रसाई मनुष्यता की सर्वोच्च अध्यात्मिक उपलब्धि है। इस योग्य होना मनुष्य का सर्वोच्च सौभाग्य है, इसके साथ मनुष्य अमृत स्त्रोत के साथ जुड़ जाता है। अपनी योग्यतानुसार आवश्यक खुराक प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

दूसरी खुराक दूसरों की विशुद्ध सेवा के कर्म हैं। यह भी उच्च वा सात्विक भावधारी मनुष्य ही कर सकते हैं। सात्विक श्रद्धा, सात्विक कृतज्ञता, दया और हानिपरिशोध के भाव ज्यों ज्यों बढ़ते जाते हैं और बलवान होते हैं, वैसे वैसे वह मनुष्य को समर्पण के लिए तैयार करते हैं और विशुद्ध सेवा के लिए मजबूर करते हैं। उक्त सात्विक भावों के बीजों को लेकर जन्म लेना और उन्हे विकसित करने वाले वातावरण में उनका विकास करना और उन्हें बलवान करना मनुष्य जीवन का बड़ा सौभाग्य है। इन सुन्दर सात्विक भावों के बिना सच्चा परोपकार असम्भव है, जैसे चीनी और घी के बिना हलवा नहीं बन सकता।

इस विषय पर गुरू महाराज एक जगह पर फरमाते हैं: -

आत्मा का बल बढ़ने का अर्थ है, आत्मा की मुख्य वा मूल निर्माण कारी शक्ति के बल का बढ़ना। आत्मा के भीतर निर्माणकारी शक्ति ही मुख्य शक्ति है। यदि आत्मा अपने भीतर अपने रहने के लिए शरीर निर्माण का काम करने की पूर्ण सामर्थ्य रखती है, तो वह मौत के बाद अपना नया सूक्ष्म शरीर बनाकर जिन्दा रह सकती है, यदि वह

शक्ति शिथिल हो जाती है, तो निर्माण कारी शक्ति अपना बल खो बैठती है। वह कोई शरीर नहीं बना सकती, बिना सूक्ष्म शरीर के वह रह नहीं सकती, और नष्ट हो जाती है, इसलिए आत्मा की इस मुख्य शक्ति की खुराक भी विशुद्ध परसेवा ही है।

"आत्मा के भीतर यह निर्माणकारी (आत्मा की मुख्य शक्ति) शक्ति विशुद्ध परोपकार के भावों से वा दूसरों को बेहतर बनाने का काम करने से बढ़ती है। यदि यह बेहतरी का काम न किया जाए, तब यह घटती है। धीरे-धीरे पूर्णत: नष्ट हो जाती है। जैसे गेहूं के दाने यदि हम भून दें या मुर्गी के अण्डे हम उबाल दें, तब उनके भीतर की जीवनी शक्तियां मर जाएंगी। उसी प्रकार बिगाड़ने वाले काम करने से मनुष्य की निर्माणकारी शक्ति भी मर जाती है।

"अब तुम लोग यह देखो के तुम दिन भर में किस कदर ऐसी गतियां करते हो, जो बनाने वाली हैं, इसके विरुद्ध जो बिगाड़ने वाली गतियां हैं, वह तो होती रहती हैं। याद रखो! कि यदि तुम्हारे तन, मन और धन की शक्तियां नेचर के भिन्न अस्तित्वों के बनाने में खर्च नहीं होंगी, तो जीवन के विचार से तुम्हारा दिवाला निकल जाएगा। जैसे कोई मनुष्य रुपये खर्च करने का काम तो करता रहे, आमदन का कोई भी काम न करे, तो वह कुछ समय में दिवालिया बन जाता है, उसी प्रकार यदि कोई मनुष्य बनाने का काम तो कोई न करे और बिगाड़ने का काम बराबर करता रहे, तो वह कुछ समय में (आत्मिक लिहाज़ से) दिवालिया बन जाता है।

"कैंसर का रोगी जी तीसरी (आखिरी अवस्था) मंजिल में पहुंच जाता है, तो उसका ईलाज असम्भव हो जाता है, उसी प्रकार जो आत्मा अपनी निर्माणकारी शक्ति को इस कदर विकृत बना लेता है फिर उसके द्वारा निर्माण का काम होना पूरी तरह बन्द हो जाता है, उसके आत्मा का बचना भी असम्भव हो जाता है।

"मनुष्य की यह निर्माणकारी शक्ति, किसी को बिना कारण दुख पहुंचाने या उसकी अनुचित हानि करने से घटती है और किसी अस्तित्व को पहले से बेहतर बनाने से बढ़ती है। यदि तुम्हारे आत्मा की ऐसी हालत हो चुकी है कि आप निर्माणकारी शक्ति बढ़ाने वाला कोई उच्च भाव भी अपने भीतर पैदा करने की सामर्थ्य खो चुके हो तो तुम जीवन दाता सत्य देव की शरण में आकर भी बच नहीं सकोगे।

"काश! कि जो आत्मा बचने की हालत में हैं, वह बच सकें और ऐसी हालत में जाने से पहले पहले बच सकें कि जिसमें पहुंचकर उनका बचना असम्भव हो जायेगा।

"आपका भला इसी में हैं कि तुम हररोज़ विशुद्ध भावों से दूसरों के लिए सेवाकारी बनकर अपने भीतर की निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाओ और मछरों, खटमलों, पिस्सूओं की तरह स्वार्थी और हानिकारक रहकर नष्ट न होवो। आपके लिए यदि सम्भव हो तो तुम बेहतर बनो, दूसरों को बेहतर बनाओ। नेचर में तुम्हारे जीवन के बनने वा बिगड़ने का यही अटल नियम है कि तुम दूसरों को बेहतर बनाने से आप बेहतर बनोगे। काश! तुम इस नियम को देख सको और उसको देखकर बिगाड़ने वाले नियमों को पूरा करने से रुक सको और बनाने वाले नियमों को पूरा करने के अधिक से अधिक योग्य हो सको"

-बलदेव सिंह

भाई बहन का सम्बन्ध

भाई बहन का रिश्ता बहुत अन्मोल होता है, इसलिए कहा जाता है इस रिश्ते में दूध की धारा की सांझ है। उनका जन्म एक माता पिता से होता है। एक ही मां की गोद में खेले होते हैं, बाप से दुलार मिला होता हैं बचपन में इक्ट्ठे खाते, पीते, खेलते, रूठते, मनाते हैं। अगर लड़ते, झगड़ते हैं, तो कुछ पल के लिए, ऐसा लगता है कि एक दूसरे के बिना एक पल भी रह नहीं सकते। कुछ देर एक दूसरे को न देखें तो व्याकुल हो जाते हैं। एक बिस्तर पर बगलगीर होकर सोते हैं।

परन्तु ज्यों ज्यों बड़े होते हैं, अपने अपने सुख हावी होने लगते हैं। जितना स्वार्थ अधिक, उतनी ही रिश्तों में कड़वाहट बढ़ जाती है। किसी की धन से उन्नति हो जाए, किसी का बच्चा अधिक पढ़ जाए, बड़ी नौकरी पर लग जाए, इस पर साधारणत: ईर्षा पैदा होने लगती है। जब तक बहन भाईयों की शादियां नहीं होती, सम्बन्ध में मिठास रहती है, उसके बाद लड़कियों को पति कैसे मिलते हैं, लड़कों को पत्नियां कैसे मिलती हैं, इस पर भी निर्भर करता है। यदि रिश्ते अच्छे भावधारी जनों से जुड़ जाएं, तो मिठास बनी रहती है, नहीं तो धीरे धीरे रिश्ते में खटास आने लगती है, दोनों ही मिलकर इस पवित्र रिश्ते को नारकी बना देते हैं। आजकल परिवार छोटे हैं, साधारणत: एक भाई बहन, या दो भाई ओर 2 बहनें होती हैं, ऐसी स्थिति में इस रिश्ते की अहमियत और भी बढ़ जाती है। जहां कई भाई और बहन एक दूसरे पर जान देते हैं, एक दूसरे के दुख सुख में दीवार की तरह खड़े हो जाते हैं, वहां ऐसे भी हैं, जो अपने स्वार्थो के कारण दूरी बना लेते हैं। एक दूसरे का मुंह देखना पसन्द नहीं करते। बोलचाल बन्द हो जाती है। निन्दा चुगली करते 2 फासले बढ़ते जाते हैं। कई जगह बहनें जिनको नम्र दिल कहा जाता है जायदाद के लिए भाईयों का कत्ल तक कर देती हैं। अपने खूबसूरत रिश्ते को गंवा बैठती हैं।

परम पूजनीय भगवान ने जहां अपने भाई के सम्बन्ध में आदर्श जीवन का दृष्टांत दिया है, वहां हम लोगों की रहनुमाई के लिए बहुत कीमती आदेश दिए हैं, जिससे हमारे बहन भाईयों के रिश्ते बेहतर हुए हैं। कितने भाईयों की वर्षों से बोलचाल बन्द थी, न केवल वह बोलने लगे, बल्कि उनका रिश्ता बहुत मिठास-पूर्ण हो गया। बिछड़े हुए भाई मिल गए। एक भाई जो थोड़े से स्वार्थ के लिए अपने भाई पर मुकदमा दायर करने जा रहा था, सौभाग्य से जाते हुए गुरु महाराज के देव प्रभावों के वितरण करने वाले एक सत्संग की एक सभा में जाते जाते बैठ गया, उन उच्च प्रभावों के मण्डल ने उसे इतना प्रभावित किया कि उठकर खड़ा होकर बोलने के लिए विवश हो गया कि मैं अपने भाई पर मुकदमा करने के लिए जा रहा था, कोर्ट में पेपर दिखाकर कहने लगा कि यह पेपर मेरे पास हैं, परन्तु इन असरों ने मुझे इतना प्रभावित कर दिया कि कभी अपने भाई पर ऐसा जुल्म नहीं करूंगा। यह आश्चर्य जनक लीला भगवान देवात्मा के असर ही पैदा कर सकते हैं।

मैं तो अपने आपको बहुत सौभाग्यवान समझती हूं कि ऐसे वातावरण में रहकर हमारा बहन भाईयों का सम्बन्ध इतना सम्मान और प्यार भरा है कि कभी किसी से लड़ना, झगड़ना, या स्वार्थ रखना तो बहुत दूर की बात है, इतना गहरा रिश्ता है कि एक को तकलीफ हो तो साए की तरह सब खड़े हो जाते हैं। मेरी एक बहन कुछ सामाजिक कारणों से

कुछ दूर हो गई, परन्तु फिर भी हमने कभी आपस में अपमान जनक शब्द या कटू शब्द बोले नहीं। न केवल हमारा बहन भाईयों का रिश्ता, बल्कि हमारा एक दूसरे के बच्चों से भी बहुत गहरे स्नेह का रिश्ता है। किसी बहनों और भाईयों का बड़ा सौभाग्य है कि वह आपसी इस प्यार और स्नेह की गरिमा को बनाए रखें। मुझे तो बड़ी हैरानी होती है कि बहन भाई लड़ कैसे सकते हैं? गुरू महाराज की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा के लिए जितना भी धन्यवाद दिया जाए, कम है।

-सुरजीत बराड़

किसी पति ने अपनी पत्नी के लिए चन्द दिल छूने वाली बातें कहीं हैं :-

अन्त में हम दोनों ही होंगे,
भले ही झगड़ें, गुस्सा करें, एक दूसरे पर टूट पड़ें
एक दूसरे पर दादागीरी करने के लिए अन्त में हम दोनों ही होंगे
जो कहना है वह कह लें, जो करना है, वह करलें
एक दूसरे के चश्में और लाठी ढूंढ़ने में
अन्त में हम अकेले ही होंगे
मैं रूठूं तो तुम मना लेना, तुम रूठो तो मैं मना लूंगा
एक दूसरे को लाड़ लड़ाने वाले,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
आँखें जब धुंधली होगी, याददाश्त जब कमज़ोर होगी
तब 'एक दूसरे' को ढूंढ़ने के लिए
अन्त में हम अकेले ही होंगे।
घुटने जब दुखने लगेंगे, कमर भी झुकना बंद कर देगी,
तब एक दूसरे के पांव के नाखून काटने के लिए,
अन्त में हम अकेले ही होंगे।
अरे मुझे कुछ नहीं हुआ, बिल्कुल नार्मल हूँ
ऐसा कहकर एक दूसरे को बहकाने के लिए,
अन्त में हम अकेले ही होंगे।
साथ जब छूट जाएगा, विदाई की घड़ी जब आ जाएगी,
तब एक दूसरे को माफ करने के लिए
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
बेटों को बहुएं ले जाएंगी, बेटियों को दामाद ले जाएंगे।
ज़िंदगी के उस आखिरी मोड़ पर साथ में सिर्फ
हम दोनों ही होंगे।
दोस्तो चाहे दुनिया कितना भी मजाक बनाए, लेकिन
सच तो यही है कि आपका हम सफर ही मौत तक आपका साथ निभाएगा।

जीवन प्रसंग

(1) **मुंबई –** पुणे एक्सप्रेसवे की मेरी हालिया रोड़ ट्रिप में मैंने मेरे पीछे एक कार देखी, जिसमें हेडलाइट नहीं थी। अपने रिवर्स मिरर में मैंने देखा कि उसका ड्राइवर मेरी गति से चलने की कोशिश कर रहा था ताकि मेरी कार की हेड और टेल लाइट का फायदा उठा सके। लेकिन अचानक मैंने उस कार के टायर फटने की आवाज सुनी और जब तक मुझे इसका अहसास होता, मेरी कार 200 मीटर आगे निकल चुकी थी। मैंने गाड़ी एक तरफ की ओर चाहा कि वापस जाऊं पर मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर ज्यादा ट्रैफिक में ऐसा संभव नहीं था। साथ ही एक्सप्रेस वे पर आसानी से गाड़ी रिवर्स नहीं कर सकते। मुझे उस व्यक्ति के लिए दुःख हुआ क्योंकि गाड़ी में उसके साथ कोई बुजुर्ग भी था। अचानक मैंने देखा कि किसी फिल्म के विलेन की तरह दिख रहे एक हट्टे-कट्टे आदमी ने पंचर कार के पीछे अपनी कार रोकी और मास्क पहनकर उसके पास जाकर मदद की पेशकश की। उस आदमी की कार की तेज हेडलाइट में सब स्पष्ट दिख रहा था। उसने कार से स्पेयर टायर निकाला, पंचर टायर बदला। फिर विलेन जैसा दिख रहा वह आदमी, पंचर कार वाले आदमी के पीछे चलता रहा और अपनी कार की हेडलाइट हाईबीम पर रख उसे गैराज तक का रास्ता दिखाया, जो 4 किमी की दूरी पर था। मैं भी विलेन जैसे दिख रहे आदमी के पीछे चलता रहा, यह सोचकर कि कहीं मेरी मदद की जरूरत न पड़े। और मैं देख सकता था कि उस आदमी की कार में तीन बच्चे और उनकी मां धैर्य के साथ बैठी थी। एक पल के लिए मैंने सोचा कि उन बच्चों के लिए सेवा और सहानुभूति सीखने के लिए ऐसे पिता से अच्छा रोल मॉडल कौन होगा, जो दिखने में काफी सख्त लग रहे हैं। मेरे हिसाब से इसे ही अपनी जीवनशैली परिभाषित करना कहते हैं। अपने जीवन को उस तरह से चलाना जैसे आप चाहते हैं।

इस बड़े दिल वाले सख्त आदमी से मुझे संजीव थॉमस की याद दिलाई, जो केरल में पलक्कड़-कोझिकोड बायपास पर एक रेस्त्रां चलाते हैं। संजीव का 'इतिहास' नाम का 18 बसों का कारवां है, जिसमें पर्यटक और राज्य परिवहन (प्राईवेट) बसें शामिल हैं। लॉकडाउन के दौरान बसें बंद से होने से इनपर काम करने वाले 30 लोगों की अजीविका प्रभावित हुई थी। उनकी अब कुछ राज्य परिवहन बसें चलने लगी हैं, लेकिन बाकी अभी बंद ही हैं। इसीलिए, 44 वर्षीय संजीव को लगा कि उन्हें अपने स्टाफ के लिए कुछ करना चाहिए।

लॉकडाउन के कुछ हफ्तों के दौरान उन्होंने अपने कुछ कर्मचारियों की बसों से आम बेचने में मदद की। ऐसा पूरे आम के मौसम में चला। उसके बाद संजीव ने सब्जी और किराना की दुकान खोली और उसमें स्टाफ के कुछ लोगों को काम दिया। ज्यादातर सब्जियां जिले के आस-पास के किसानों से सीधे ली जाती हैं। बाद में संजीव को 'कट्टन्स' नाम के एक रेस्त्रां का आइडिया आया, जिसमें उन्होंने कुक और टी-मास्टर के अलावा अपने दर्जन भर स्टाफ को काम पर लगाया। यह शायद पहला रेस्त्रां है जिसे मलयालम फिल्मों में नकारात्मक भूमिकाएं निभाने वाले मशहूर अदाकारों के कैरीकेचर से सजाया गया है। संजीव कुछ हटकर डिजाइन चाहते थे, इसीलिए वे रेस्त्रां को मलयालम सिनेमा के विलेन से सजाने के लिए प्रेरित हुए।

शायद उन्होंने यह सोचा हो कि फिल्मों में विलेने की भूमिका निभाने वाले लोगों का दिल बड़ा होता है। वे बुरी परिस्थितियों में फसे लोगों की मदद के लिए कदम बढ़ाते हैं। सोनू सूद का ही उदाहरण ले लें, जिन्हें बॉलीवुड का बेहतरीन विलेन माना जाता है। वे पूरे लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूरों को ट्रेन, बस और प्लेन में घर पहुंचाने में मदद करने के लिए सुर्खियों में रहे थे।?

<u>फंडा यह है कि :</u> आपका लुक लोगों को कैसा भी लगे, लेकिन आपकी जीवनशैली आपके बारे में उनकी राय बदल देती है। -दैनिक भास्कर

(2) जब एक दुखी मां की पूरी हुई आस

अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को में रहने वाली एनी स्वयं को बड़ा भाग्यवान मानती थी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी और स्नेह करने वाला पति था। एक प्यारे बच्चे की यह मां भी थी। अचानक एक दिन बच्चे को बुखार आया और लाख प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका। एनी पूरी तरह टूट गई। एक दिन उसकी एक मित्र उससे मिलने आई। उसने एनी से कहा - 'एनी! तुम्हारा दुख - दर्द बस दूर हुआ समझो। हिंदुस्तान से एक योगी यहां आया है। वह तुम्हारे दुख को अवश्य दूर कर देगा। तुम उसके पास चलो।' एनी तैयार हो गई। स्वामी जी से मिलकर उनके व्यक्तित्व से एनी बहुत प्रभावित हुई। उसकी मित्र ने स्वामीजी को उसके पुत्र की मृत्यु के विषय में बताया। एनी दुखी होकर स्वामीजी से बोली - 'स्वामीजी! मैं क्या करूं जिससे मुझे शांति मिले?' स्वामीजी ने कहा - 'मां! शांति का तो मेरे पास भंडार भरा है, किंतु तुम्हें उसकी कीमत चुकानी होगी।' एनी बोली - 'मुझे मेरा बेटा चाहिए, स्वामीजी! आप मुझसे जो कीमत चाहे कितनी ले लीजिए।' स्वामी जी ने हंसकर कहा - 'मुझसे सोना - चांदी या हीरे - जवाहरात के रूप में कीमत नहीं चाहिए। तुम्हें इंसानियत का 'सिक्का' देना पड़ेगा।' एनी ने स्वीकृति दी। तब स्वामी जी उसे एक निर्धन बस्ती में ले गए और एक अनाथ हब्शी बालक का हाथ पकड़कर बोले- 'यह रहा तेरा बेटा, तू इसे जितना स्नेह करेगी, उतना ही सुख पाएगी।' स्वामी जी के वचन सुन एनी का गोरी जाति का अहंकार नष्ट हो गया और मातृत्व जाग उठा। उसने हब्शी बालक को हृदय से अपना लिया । वस्तुत: अनाथ, असहाय को अपनाकर उसी में आनंद धन पाने वाला न केवल सकून पाता है, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी बनता है।

देश विदेश के समाचार

नये वर्ष के आरम्भ होने पर जनवरी के महीने में बहुत सी महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटी :-

1. 26 जनवरी को हमारा गणतन्त्र दिवस बहुत शान से मनाया गया। बेशक कोविड के कारण झांकिया कम थी, और रास्ता भी कम लम्बा लिया गया। परन्तु क्या हमारी सारी सेनाओं के सारे जवानों ने जिस खूबसूरती से परेड की, वह दृश्य बहुत सुहावना था। महा - मान्य राष्ट्रपति जी ने सलामी ली। पहले राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया और सारी Ceremony शांतिपूर्वक हुई। हमारी आज़ादी के 72वें समारोह में पहली बार विदेशी मेहमान नहीं था। इसका कारण भी कोविड की महामारी थी। बाद में Rafal हमारे विदेशी विमानों ने अपने करतव दिखाए। जिससे लोगों में अपनी सुरक्षा को लेकर बहुत उत्साह था।

2. जैसा कि सब जानते हैं कि हमारे किसान भाईयों का चार महीने से आन्दोलन चल रहा है। 2 महीने से ऊपर वह दिल्ली बार्डर पर डटे हुए हैं। उनका मकसद एक ही है कि जो तीन नये कानून उनके हित में नहीं, उन्हें वापिस लिया जाए बहुत बार उनकी बातचीत सरकार के साथ चली है, परन्तु निदान नहीं हुआ। 26 जनवरी को डटे सैकड़ें ट्रैक्टरों द्वारा उन्होंने शांतिपूर्वक रैली निकालनी थी। परन्तु कुछ शरारती तत्त्वों ने आन्दोलन के डिसपलिन को भंग कर दिया और लाल किले पर चढ़ गए, वहां अपने संगठन का झण्डा फहरा दिया। इससे सीधे साधे किसानों को बहुत धक्का लगा। जिस आन्दोलन ने दुनिया में अपने शांतिपूर्ण अनुशासन की धाक जमा दी थी, उसकी साख को बट्टा लगा दिया, जो किसान संगठनों के लिए बहुत दुखदाई है। सत्य कहते हैं कि सारे घर को जलाने के लिए एक जलती हुई दियासलाई की सीख ही काफी हैं।

3. चण्डीगढ़ में एक चौकीदार ने रात के समय इस्टेट आफिस से 2 से चार कनाल के घरों की फाइलें जलाकर आग के हवाले कर दी। क्योंकि उन कोठियों पर कई तरह के objection थे। अब इसकी जांच हो रही है कि किस की मिलीभगत से यह काम हुआ।

4. अमरिका में ट्रम्प की हार के साथ बाईडेन के प्रैज़ीडेंट बनने से लोकतन्त्र की बहाली हुई है, काश! हमारे देश में भी ऐसा हो सके।

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2021 ई०)

1	माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में	1 फरवरी, सोमवार (गणेश चौथ)
2	भाई बहनों के सम्बन्ध में	16 फरवरी, मंगलवार (बसंत पंचमी)
3	देव समाज के सम्बन्ध में (देव समाज उत्सव)	7, 8, 9 मार्च, रवि, सोम, मंगल
4	पति पत्नी के सम्बन्ध में	29 मार्च, सोमवार (होली)
5	उदभिद जगत् के सम्बन्ध में	13 अप्रैल, मंगलवार (नव सम्वत्)
6	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	28 अप्रैल, बुधवार
7	स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में	25 मई, मंगलवार (नृसिंह चतुर्दशी)
8	स्वदेश के सम्बन्ध में	21 जून, सोमवार (निर्जला एकादशी)
9	साथी सेवकों के सम्बन्ध में (सेवक उत्सव)	23, 24, 25 जुलाई, शुक्र, शनि, रवि (व्यास पूजा)
10	सत्य धर्म बोध उत्सव (स्वास्तित्व के संबंध में)	21, 22, 23 अगस्त, शनि, रवि, सोम (रक्षा बंधन)
11	पशु जगत् के सम्बन्ध में	14 सितम्बर, मंगलवार(राधा अष्टमी)
12	परलोक के सम्बन्ध में	6 अक्तूबर, बुधवार (अंतिम श्राद्ध)
13	स्वजाति के सम्बन्ध में	15 अक्तूबर, शुक्रवार (दशहरा)
14	भौतिक जगत् के सम्बन्ध में	4 नवम्बर, बुधवार (दीपावली)
15	मनुष्य मात्र के सम्बनध में	19 नवम्बर, शुक्रवार (गंगा स्नान)
16	भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	18,19,20,21 दिसम्बर, शनि, रवि, सोम, मंगल

नोट :– 1) परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संबंध में आरम्भिक दिन 20 नवम्बर 2021 ई. दिन शनिवार है।
2) परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म दिन 20 दिसम्बर 2021 ई दिन सोमवार है।
3) साधनों को जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए है, वह साधन विविध स्थानों जहाँ तक संभव हो उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्यौहार मनाया जाए।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री– **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts